MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

VIDYAWARTA®

Issue-36, Vol-03 Oct. to Dec-2020
Peer Reviewed International Referred Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

14) भारतातील आणि भागातील शारिरीक शिक्षण शिक्षक व क्रिडा प्रशिक्षकांमध्ये ...
प्रा. कुमुद व्ही. धारमोडे, नागपुर ||74

15) लोककथेची संकल्पना, स्वरूप, वैशिष्ट्ये
प्रा. गोविंद विठ्ठलराव पोटमाळे,नांदेड. ||78

16) पेशवेकालीन वेठबिगार
प्रा. डॉ. जी. एस. पाटील, नांदेड ||82

17) भारत, चीन व व्हिएतनाम या राष्ट्रातील आंतरराष्ट्रीय संबंधाचे अध्ययन
डॉ. विजय साहेबराव तुंटे, रविंद्र संतोष माळी, जळगांव ||84

18) निवडुंगातून आलेली फुले मधील आदिम जीवन जाणिवा
डॉ. सूर्यप्रकाश जाधव, नांदेड ||87

19) ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति में दिनाकर साहित्य की प्रासंगिकता
डॉ. बलराम कुमार, समस्तीपुर ||90

20) वर्तमान संदर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सहिष्णुता की भावना पर ...
अमिता कुमारी, डॉ. प्रमिला दुबे, जयपुर(राज.) ||93

21) मादक द्रव्य व्यसन एवं सरकारी नीतियाँ
डॉ. प्रतापसिंह बिष्ट, टिहरी गढ़वाल ||96

22) भारत में सौंदर्य की अवधारणा का सच: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. धनवन्ती कुमारी, मधुबनी ||98

23) नई शिक्षा नीति २०२० के कुछ अंकुरित प्रश्न
डॉ. महीपाल, सोनीपत ||102

24) भ्रष्टाचार का भारतीय महाकाव्य : 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे'
संतोष नागरे, बीड ||104

25) दलित राजनीति की प्रकृति
डॉ. रामनाथराम, बिहार ||108

26) बिहार राज्य के आर्थिक विकास में ग्रामीण बैंकों की भूमिका
डॉ. राजीव रंजन, समस्तीपुर ||111

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

24

भ्रष्टाचार का भारतीय महाकाव्य : 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे'

संतोष नागरे
सहा.प्रा.-हिन्दी विभाग
र.भ. अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड

शरद जोशी समकालीन हिंदी व्यंग्य साहित्य के शीर्षस्थ रचनाकार हैं। शरद जोशी ने विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं में स्तंभ लेखन के माध्यम से व्यंग्य को लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाया। साथ ही कवि सम्मेलनों में व्यंग्य को कविता की तरह पढ़कर खूब धूम मचाई। कांतिकुमार जैन इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "शरद जोशी अपने निबन्धों में हमारे रोजमर्रा के अनुभवों को एक सिलसिला देते हैं वे व्यंग्य लिखते नहीं, व्यंग्यपूर्ण स्थितियों के बीच हमें खड़ा कर देते हैं। उनके व्यंग्य का सम्प्रेषण नहीं होता, उसका साक्षात्कार होता है। लेखक और पाठक या श्रोता की यह तद्रूपता विरल ही है। मंच या माइक के सामने खड़े हुए शरद के व्यंग्य सुनना एक अनुभव हुआ करता था। उस जमाने में कवि सम्मेलनों के घटते स्तर को रोकने का जबर्दस्त काम शरद के व्यंग्य पाठों ने किया। हिंदी में टिकट खरीदकर व्यंग्य सुनने की परम्परा शरद ने चलाई।"[1] शरद जोशी की 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'रहा किनारे बैठ', 'मेरी श्रेष्ठ रचनाएँ', 'पिछले दिनों', 'किसी बहाने', 'परिक्रमा', 'यथासम्भव', 'यंत्र तंत्र सर्वत्र' तथा 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' प्रसिध्द व्यंग्य रचनाएँ हैं।

शरद जोशी का प्रसिध्द व्यंग्य संग्रह 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' सन १९७७ में भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नयी दिल्ली से प्रकाशित हुआ। जिसमें शरद जोशी द्वारा चुनी गई अपनी तेइस व्यंग्य रचनाओं को संकलित किया गया है। प्रस्तुत व्यंग्य - संग्रह में संकलित रचनाएँ स्वातंत्र्योत्तर भारत की बहुविध विसंगतियों पर सटीक प्रतिक्रिया के माध्यम से हमारे मन - मस्तिष्क को झकझोरकर अपनी सार्थकता सिध्द करती हैं। जनतंत्र में जनता और जनप्रतिनिधियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जनतंत्र के सफल निर्वहन में दोनों का अपना उत्तरदायित्व है। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के पश्चात संवैधानिक मूल्यों के अवमूल्यन तथा जन पर तंत्र हावी हो जाने से हमें मोहभंग की पीड़ा से गुजरना पड़ा। 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' यह व्यंग्यात्मक शीर्षक भ्रष्ट जनतंत्र की जनता और जनप्रतिनिधियों की पोल खोलते हुए स्वातंत्र्योत्तर भारत की करुण कथा को बयान करता है। स्वतंत्रता के पश्चात हमने प्रजातंत्र अपनाया। प्रजातंत्र के पश्चात बदली राजनीति ने हमें मोहभंग की पीड़ा से गुजरने पर विवश किया। राजनीति में पनपता भाई-भतीजा वाद, अवसरवादिता, दलबदल वृत्ति, जातियता, साम्प्रदायिकता, नोट के माध्यम से वोट खरीदना, आत्मसम्मान वृत्ति का अभाव, भ्रष्टाचार तथा जनहीत की उपेक्षा कर आत्महीत में लगे राजनेताओं की स्वार्थहीनता ने 'लोक हितकारी राज्य' व्यवस्था को तिलांजली दे दी। शरद जोशी इस सन्दर्भ में कहते हैं, - " मैं सिर्फ इतना कहूँगा कि अगर आप नर्मदाबाई के घर ही दिन-रात नहीं पड़े रहते और क्षेत्र की जनता से मिलते, दौरा-प्रचार करते तो आपकी विजय निश्चित होती। आपके घर रहने की वजह से नर्मदाबाई भी लेड़ीजों में प्रचार नहीं कर पायी।"[2] 'स्मृति चिह्नों का उपयोग' में राजा की रंगी लम्पटता तथा संवेदनहीनता के माध्यम से आज के नेताओं की चरित्रहीनता पर प्रहार किया गया है। राजा ने अपनी पत्नी की स्मृति को अमर रखने के लिए लड़कियों का होस्टल, स्वीमिंग पूल बनाया, साथ ही स्वर्गीया महारानी के नाम पर डाक टिकट जारी कर सड़क का नामकरण किया गया। दुर्भाग्य से उसी होस्टल में रहनेवाली और स्वीमिंग पूल में तैरनेवाली अनिंद्य सुन्दरी पर राजा का दिल आ गया। अपने प्रेम प्रदर्शन के लिए राजा ने अपनी दिवंगत पत्नी की स्मृति चिह्नों का सदुपयोग कर उस अनिंद्य सुंदरी को प्राप्त कर लिया। शरद जोशी कहते हैं, - " राजा ने तुरन्त एक पत्र लिखा, लिफाफे में रखा, उस पर वह टिकट चिपकाया जो स्वर्गीय महारानी के नाम से चलाया गया था और भेज दिया।... राजा ने कोषागार से स्वर्गीया महारानी के आभूषण निकालकर उस स्वीमिंगपूल की सुन्दरी को भेंट करना आरम्भ कर दिये। राजा सुबह - शाम महारानी की याद में बनाए होस्टल के चक्कर लगाने लगा और एक दिन दोनों का विवाह हो गया। जिस दिन राजा-रानी की सवारी निकली उत्साह छोड़ रही उस सड़क पर जो स्वर्गीया महारानी की स्मृति में बनाई गयी थी।"[3] 'सरकार का जादू' में शरद जोशी जी ने गरीब की दरख्वास्त को रिजेक्ट कर अमीर की दरख्वास्त को सिलेक्ट करनेवाली सरकार की नीति का पर्दाफाश किया है। साथ ही राजनीति की आड़ में पनपता भ्रष्टाचार, पर्यटन के नाम पर विदेशी पर्यटकों कि की जानेवाली लूट, दिशाहीन विदेश नीति, भतीजावाद, दलबदल वृत्ति तथा गरीब का पेट काटनेवाले यंत्र के माध्यम से प्रजातन्त्र की पोल खोली है। प्रजातन्त्र की बिगड़ती कार्यपद्धति के सन्दर्भ में शरद जोशी कहते हैं, - "आज हमारे देश के आचरण - व्यवहार अनैतिक, दोषपूर्ण और अनुचित है। बार-बार दल बदलना इसका प्रमाण है। सारे प्रजातन्त्र की कार्यपद्धति बिगड़ रही है।"[4]

आजादी के पश्चात पूरे देश में भ्रष्टाचार का पौधा खूब फला-फूला। संसद, विधानसभा, जिला दफ्तर, तहसील, बी.डी.ओ., पी. डब्ल्यू.डी., आर.टी.ओ., चुंगी नाके, बीज गोदाम तथा पुलिसवाटी

Scanned with CamScanner

भ्रष्टाचार की भ्रष्ट कहानी कहती है। टंडर संस्कृति, पंचवर्षीय योजना और विदेशों से आये उधार रुपयों को मिल बाँटकर खाने की प्रवृत्ति ने राष्ट्रीय एकता को और मजबूत किया। भ्रष्टाचार की दलदल में फँसे भारत की व्यथा को बयान करते हुए शरद जोशी 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' में कहते हैं - "कहीं पर नहीं खिल रहे भ्रष्टाचार के फूल! जहाँ-जहाँ जाती है सरकार, उसके नियम कानून, मन्त्री अमला, कारिन्दे साथ होते हैं। जहाँ-जहाँ जाती है सूरज की किरन, वहीं-वहीं पनपता है भ्रष्टाचार का पौधा। खूब चीटती है इसको, बड़ी-फैली ज्योग्राफी, मोटा इतिहास, निरंतर निजी लाभ का अर्थतंत्र, उज्ज्वल भविष्य, भारतीय नेताओं, कर्मचारियों, अफसरों के हाथ में भाग्य रेखा के समानान्तर भ्रष्टाचार की नयी रेखा बन रही है आजकल । .. पूरी धरती पर छा गये काले व्यवसाय के बादल। भ्रष्ट अफसर खरीदता है खेत यानी फार्म, जुतवाता है कृषि विभाग का ऑसिस्टेंट, ट्रेक्टर कम्पनी के एजेंट से कहकर, जहाँ लगता है मुफ्त पम्प और प्यासी धरती पीती है रिश्वतों का पानी, देती है गेहूँ जो बिकता है काले बाजार में। सारे सागर की मसी कर और सारी जमीन का कागज फिर भी भ्रष्टाचार का भारतीय महाकाव्य अलिखित ही रहेगा।.. भ्रष्टाचार के नाले, नाली, पहाड़ियाँ, तालाब, नदी, सींच रहे हैं राष्ट्र का नया व्यक्तित्व।" भ्रष्टाचार ने सार्वजनिक क्षेत्र को चौपट किया। निजी क्षेत्र जहाँ सफलता के शिखर छू रहा है वहीं कुछ लोग सार्वजनिक क्षेत्र की मुर्गी को निगलकर उसके अंडों का आमलेट बनाकर खाए जा रहे हैं। 'सरकार का जादू' में सार्वजनिक क्षेत्र को ध्वस्त करनेवाले मन्त्री, आई.ए.एस. अधिकारी, ट्रेड यूनियन नेता, इंजीनियर और बाबू इन पंचमहाभूतों की पोल खोलते हुए शरद जोशी कहते हैं,- " कैसा है पब्लिक सेक्टर साहबान, मुर्गी भी गायब हो गया अंडा रखा तो अंडा भी गायब हो गया। थोड़ा जाँच-इंक्वारी करना होगा। जादूगर मंच से उतरा। सामने की पंक्ति में बैठे एक मिनिस्टर साहब की जेब में से एक अंडा निकालकर दिखाया। कुछ दूर एक आई.ए.एस. अधिकारी बैठे थे, उनकी नाक से अंडा टपकाकर निकाला। थोड़ी दूर पर एक ट्रेड यूनियन नेता बैठे थे उनकी टोपी उठाकर अंडा उसमें से निकाला। एक इंजीनियर की बगल से निकाला। एक बाबू की जेब से निकाला। ये थी पाँच अंडा है साहबान जो पब्लिक सेक्टर से गायब हो गया था। हाथ नहीं पकड़ता तो साथ उसका आमलेट बनाकर खा जाता।" भ्रष्टाचार बाबू लोगों की लालफीताशाही की देन है। जो आदमी पर नहीं कागजों पर भरोसा करती है। कागज ही उसके लिए अंतिम प्रमाण है। 'सारी बहस से गुजर कर' में कागजी प्रमाण के आधार पर चलनेवाली संवेदनाहीन भ्रष्ट नौकरशाही की पोल खोली गयी है। जो अपने सिध्दान्तों की इतनी पक्की होती है कि कुछ लिए बिना अपने बाप को भी पहचानने से इन्कार करती है। शरद जोशी इस सन्दर्भ में कहते हैं, " मैं भी पाँच रुपये से कम में किसी को नहीं पहचानता। मेरी तो यही कामना है कि आप और आगे बढ़ें। आप विभाग की ओर मुड़े। जैसा अदना आदमी जो आप जैसे व्यक्ति को आज सिर्फ पाँच रुपये में पहचान लेता है, कल पचास और सौ रुपयों में पहचाने।" लालफीताशाही की आड़ में आम आदमी को डराकर लूटनेवाली नौकरशाही व्यवस्था बड़े साहब के सामने दुम हिलाने लगती है। 'पर्जीनिया वुल्फ से सब डरते हैं' में बड़े साहब की कृपा दृष्टि बनी रहे इसलिए डर के मारे उनकी हाँ-में-हाँ मिलानेवाली दोगली नौकरशाही की पोल खोली है। शरद जोशी कहते हैं, - "हू इज अफ्रेड ऑफ वर्जीनिया वुल्फ। वर्जीनिया वुल्फ से कौन डरता है? सब डरते हैं साले, सब डरते हैं। किसी के बाप में हिम्मत नहीं कि जरा बोल दें।"

स्वतन्त्रता के पश्चात बढ़ती आर्थिक विषमता ने अमीर और गरीब के बीच की खाई को और चौड़ा किया। इस देश में सर्वहारा वर्ग दो जून की रोटी के लिए, मध्यवर्ग अपनी सुविधा के लिए तो उच्च वर्ग अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित है। 'पास पर खेलते अल्सेशियन' में अपने पेट की भूख मिटाने के लिए मालिकों के सामने दुम हिलानेवाले तथाकथित बुध्दिजीवियों पर प्रहार किया गया है। मालिकों और अल्सेशियनों के बीच अपनी सुरक्षा और सुविधा के अन्तर्सम्बन्धित सम्बन्धों की पोल खोलते हुए शरद जोशी कहते हैं,-" मैं काफी देर तक यह निश्चित नहीं कर पाया कि अल्सेशियन पालना मालिक की साजिश है या यह अल्सेशियनों की साजिश है कि उन्होंने जिन्दगी गुजारने को एक मालिक खोज निकाला है। कमाल है। दोनों बड़े चतुर हैं।" स्वतन्त्रता के पश्चात हुए औद्योगिक विकास से जहाँ एक ओर महानगरों की सम्पन्नता बढ़ी वहीं दूसरी ओर मनुष्य संवेदनाहीन होकर मात्र मशीन का पुर्जा बनकर रह गया। 'कॉफी - हाउस में बैठे चार व्यक्ति' में अजनबीपन, भय, मृत्युबोध और घृणा के माध्यम से आत्मबोध रहित, दिशाहीन तथा संवेदनाहीन महानगरीय समाज जीवन का नग्न यथार्थ है। शरद जोशी कहते हैं, - "यह मुर्दा शहर है, यहाँ की सारी इमारतें कंकाल हैं और मेरा शरीर पारदर्शी है। मुझे शब्दों के अर्थ और बदन पर लिपटे कपड़े व्यर्थ लगते हैं। मैं इन्हें उतारना चाहता हूँ और इस मुर्दा शहर की कंकाल इमारतों के बीच से गुजर जाना चाहता हूँ।" महानगरों के विस्तार और भौतिक सम्पन्नता के चलते चोरी, लूटपाट, बलात्कार, हत्या और आत्महत्या जैसी अपराधिक घटनाएँ बढ़ रही है। इस कृषिप्रधान देश में अभावग्रस्त जीवन और शोषण के चलते किसान आत्महत्याएँ करने के लिए विवश है। वस्तुतः यह व्यवस्था द्वारा की गयी हत्याएँ ही है जिसे पुलिस व्यवस्था आत्महत्या के रूप में प्रस्तुत करती है। शरद जोशी 'समस्या सुलझाने में बुध्दिजीवी का योगदान' में स्पष्ट कहते हैं, - "हमारे देश में बड़े आदमी की हत्या होती है। गरीब को आत्महत्या करनी पड़ती है। उसे मारने की कोई भी जरूरत नहीं है। उनका शोषण किया जाता है मारा नहीं जाता। यदि किसी गरीब की हत्या हुई है तो

यह साबित करना पड़ता है कि यह आत्महत्या नहीं है। पुलिस मानती नहीं। गरीब को कौन मारेगा, इसमें रखा क्या है। बिना अच्छी आर्थिक स्थिति के आपको इस देश में हत्या भी नहीं हो सकती।"[11]

धर्म मानवता का संवाहक है। आजादी के बाद वोट बैंक की राजनीति ने धर्म के आधार पर समाज को खंडित किया। इसलिए राजनीति में धर्म के ठेकेदारों का महत्व बढ़ा। 'सन्त सीकरी में बड़े व्यस्त हैं', में संतों की आध्यात्मिक दुकानदारी, कमीशनखोरी, राजनीति के महाप्रभुओं का गुणगान कर पुरस्कारों से सम्मानित होनेवाले आज के संतों का यथार्थ है। सम्राट अकबर को 'सन्तन को कहां सीकरी सो काम' कहकर सीकरी में आने का विरोध करनेवाले संत कुम्भनदास के माध्यम से आज स्वयं राजधानी में सत्ता के साथ सांठ-गांठ कर सुविधा भोगी बने आधुनिक संतों की पोल खोलते हुए शरद जोशी कहते हैं, - "सन्त सीकरी में मजे लूट रहे हैं। एक चित्रकला की छात्रा से उनके अनैतिक सम्बन्धों की भी अफवाह है, पर यह झूठ है और जलनेवालों ने उड़ाई है। स्वास्थ्य में सुधार हुआ है, कुण्ठाएं कम हुई हैं। मुझे लगता है, अब वे जिन्दगी भर सीकरी छोड़नेवाले नहीं है।"[12] राजनीति के साथ ताल-मेल बिठाते हुए तथाकथित धर्म के ठेकेदारों ने माया का साम्राज्य खड़ा कर धर्म को विकृत किया। 'चंदीवाले का पुजारी' में धर्म की आड़ में किये जानेवाले भ्रष्टाचार की पोल खोली है।

आज का युग बाजार का है। इस बाजारीकरण के दौर में हम मनुष्य के रूप में ग्राहक बने रहने के लिए अभिशप्त है। पैसा बाजार का धर्म है और लूट उसकी संस्कृति। 'पइसा का गॉडेस' में पैसा ही देवता है। अत:पूरे देश में गॉडेस लक्ष्मी या पइसा का गॉडेस का पूजन कर दीवाली बड़ी धूम-धाम के साथ मनायी जाती है। बाजार की विज्ञापन संस्कृति में स्त्री को एक वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। 'मधुबाला से टी.वी. बाला तक' में शरद जोशी कहते हैं, - "जब से टी.वी. लगा पराई बहू -बेटियों को पवित्र भाव से देखने की स्थिति ही खत्म हो गयी घर में। मुझ में पहले भी खास नहीं थी। अब तो रही ही नहीं।"[13]

विज्ञापन की इस मनमोहक - आकर्षक दुनिया में मनुष्य का चश्मा तो बड़ा होता जा रहा है मगर दृष्टि संकीर्ण होती जा रही है। 'जिन्दगी को कुरेदती हुई कला' में इसकी पोल खोलते हुए शरद जोशी कहते है,- "मैं तो आजकल उन बड़े-बड़े चश्मों पर मोहित हो रहा हूं। आदमी की दृष्टि संकीर्ण होती जा रही है मगर उसका चश्मा बड़ा होता जा रहा है, यही क्या कम है।"[14] बाजार की 'यूज अेंड थ्रो' संस्कृति ने प्रेम की पवित्रता को नष्ट कर दिया। 'मुद्रिका रहस्य' और 'नया मेघदूत' में दुष्यंत -शकुन्तला, यक्ष-यक्षिणी के माध्यम से प्रेम को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। प्रेम में सब कुछ जायज है कि उक्ति ने आज प्रेम को नौटंकी बना दिया है। शरद जोशी 'मुद्रिका रहस्य' में कहते हैं, - "राजा लोग यात्रा में यहां-वहां विवाह कर लेते हैं और राजधानी आकर भूल जाते हैं।"[15]

बाजार की उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी मूल्यव्यवस्था को काफी प्रभावित किया है। 'अतिथि देवो भव:' यह हमारी संस्कृति रही है। परिवार विघटन के चलते एकल परिवार में अतिथि सदा देवता ही नहीं कभी मनुष्य तो कोई अंशों मे राक्षस भी हो सकता है। समाजीकरण के अभाव में आज का मनुष्य दो-तीन दिन से अधिक किसी भी अतिथि को बर्दाश्त नहीं कर पाता। 'तुम कब जाओगे, अतिथि?' में शरद जोशी कहते हैं, - "शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गये। परिवार, बच्चे,नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार- नियोजन, महँगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी जिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है। सौहार्द अब शनै:शनै: बोरियत में रूपान्तरित हो रहा है। भावनाएं गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही है। पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद से तुम्हारा व्यक्तित्व यहां चिपक गया है।.. मेरे अतिथि मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूं। मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं। एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। तुम लौट जाओ अतिथि! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा।"[16] वैश्वीकरण के इस दौर में परिवहन साधनों की उपलब्धता से पर्यटन विकसित हो रहा है। बिजली के हॉर्न से भोंपू बजाने की कला लुप्त हो गयी। जिससे सारी सड़कें संगीत-विहीन हो गयी। 'भोंपू बजाने की लुप्त कला' को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए शरद जोशी कहते हैं, "अब न वैसी मोटरें रही, न वैसे मोटर चलाने वाले। भोंपू बजाने की कला धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। बिजली के हॉर्न ने इस कला को समाप्त कर दिया। भोंपू के प्रति जो सम्मान का भाव था अब धीरे-धीरे क्षय हो रहा है। सारी सड़कें संगीत-विहीन हो गयी और उसकी जगह ले ली 'पी.पे-पें' ने जो निहायत असांस्कृतिक लगती है।"[17] अपने कीमती समय को बचाने के लिए लोग हवाई जहाज से सफर करते है। लेकिन हवाई जहाज के सफर में वह आनंद नहीं आता जो रेल यात्रा में आता है। रेल यात्रा जीवन संघर्ष, रोमांच, विजय और एक प्रेम कथा से भरी पूरी होती है। 'ऊपर उठने की मुसीबत' में रेल यात्रा की तुलना हवाई जहाज की यात्रा से करते हुए शरद जोशी कहते हैं, - "रेल की यात्रा से उतरता हूं तो बदन में थकान होती है। लगता है यात्रा की है। हवाई जहाज में लगा जैसे मुझे कोई पार्सल करके भेज रहा है। अजी यह भी कोई यात्रा हुई। अरे सीट के लिए लड़ाई लड़े बिना हम कभी बैठे ही नहीं ट्रेन में। हवाई जहाज में किससे लड़ें, और किस बात के लिए लड़ें? हमारे लिए यात्रा का अर्थ है जीवन, संघर्ष, रोमांच, विजय और एक नयी प्रेमकथा। हम लल्लू बने यात्रा नहीं कर सकते। इसलिए निश्चित है कि हम भविष्य में हवाई जहाज में यात्रा नहीं करेंगे। और इसका दूसरा सबसे बड़ा कारण यह भी है मित्रों कि आजकल उसका टिकट महँगा होता है।"[18]

भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। भाषा समाज को एक सूत्र में जोड़ने का काम करती है। राष्ट्रभाषा हिंदी की स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी का विकास जिस रूप में होना चाहिए था वह नहीं हो पाया। हमारे यहाँ प्रेमपत्रों में प्रयुक्त की जानेवाली घिसी-पिटी शब्दावली की वजह से हिन्दी की दुरावस्था है। अतः नव- नवीन सम्बोधनों, उपमाओं का प्रयोग करते हुए भाषा का स्तर सुधारने की आवश्यकता है। राष्ट्रभाषा के प्रचार - प्रसार में प्रेमपत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः इस पाठ्यक्रमेतर गतिविधियों का सफल निर्वहन करनेवाले छात्रों को अतिरिक्त अंक देते हुए उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए। 'भाषा का प्रश्न प्रेमपत्रों के संदर्भ में' इस व्यंग्य में शरद जोशी कहते हैं,- "पर प्रेमपत्रों का स्तर, जो हिन्दी के विकास के साथ आजादी के इतने वर्षों बाद उठना चाहिए था, नहीं उठ पाया। सम्बोधन और संवाद के स्तर पर वही पुराने घिसे-पिटे मुहावरे चले आ रहे हैं। खेद है, कमबख्त आजकल भी सुन्दर कन्या को चाँद ही कहते हैं। मुझे तो चाँद पुराने मुरब्बे की तरह लगता है, जो न खा सकें, न फेंक सकें। या हो सकता है, मनुष्य के जीवन में सुन्दर कन्याओं की यही स्थिति हो।""

भाषा के साथ साहित्य समाज का अभिन्न अंग है। साहित्य समाज को प्रतिबिम्बित ही नहीं करता अपितु समाज को दिशा देने का भी काम करता है। अतः हमारे यहाँ साहित्यकारों को उनके इस असाधारण योगदान के लिए सम्मानित करने की परम्परा रही है। सरकार भी इस दिशा में विशेष कार्य करती हुई दिखाई देती है। सरकार द्वारा सांस्कृतिक आदान-प्रदान (एक्सचेंज प्रोग्राम) के अंतर्गत यहाँ के कवि को उधर और वहाँ के कवि को इधर बुलाने की परम्परा, दुभाषियों की अज्ञानता, प्रकाशकों द्वारा की जानेवाली लूट तथा साहित्य की मूल्यहीनता पर प्रहार करते हुए 'जाने किस स्थान के कवि से बातचीत' में शरद जोशी कहते हैं, - "सरकार कुछ ऐसे प्रोग्राम बनाती है जिसके अन्तर्गत यहाँ के कवि वहाँ भेजे जाते हैं और वहाँ के किसी कवि को इधर बुलाया जाता है। यहाँ के बजाने-नाचनेवाले वहाँ जाते हैं और उधर वाले इधर आ जाते हैं।"" पेशेवर साहित्यकारों की तरह ही पेशेवर अध्यक्षों की भी इस देश में कोई कमी नहीं। अध्यक्षता एक मर्ज है। जो एक बार लगा तो फिर साथ नहीं छोड़ता। गम्भीरता, व्यस्तता, सर्वज्ञान संपन्नता तथा प्रमुख वक्ता से अपनी असहमति प्रकट करना पेशेवर अध्यक्ष की विशेषताएँ मानी जाती है। 'अध्यक्ष महोदय', में पेशेवर अध्यक्षों की पोल खोलते हुए शरद जोशी कहते हैं,- "भाषण एक ऐसी दुकान है जो हर कहीं खुल जाती है, ग्राहक लापरवाह हो जाता है। बड़ा अध्यक्ष देर से आता है क्योंकि वह व्यस्त होता है। धन्यवाद देने वाले उन्हें इसी बात का धन्यवाद देते हैं कि इतने व्यस्त होने पर भी वे समय निकालकर आये। जो शख्स पूरी जिन्दगी अध्यक्षताएँ करने का तय किये है उसका आभार माना जाता है कि उन्होंने अध्यक्षता करना स्वीकार किया।""

सारांश :-

प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी ने 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारत की व्यथा- कथा को दो टूक शब्दों में बयान किया है। स्वतंत्रता पश्चात का मोहभंग, राजनेताओं की चरित्रहीनता, भाई-भतीजावाद, अवसरवादिता, दलबदल वृत्ति से निर्मित आयाराम-गयाराम संस्कृति, क्षेत्रीयता, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, वोट के लिए नोट, आश्वासन पूर्ति का अभाव, बढ़ती आर्थिक-सामाजिक विषमता, भ्रष्टाचार एवं भ्रष्ट लालफीताशाही, दिशाहीन विदेश नीति, पर्यटन की दुरावस्था, महानगरीय सभ्यता की अमानवीयता, अध्यात्म का बाजार, विज्ञापन जगत का सम्मोहन, बाजारवाद के चलते फलती- फूलती लूट संस्कृति, संयुक्त परिवार विघटन से उत्पन्न सामाजिक समस्याएँ, टूटते-चरमराते मूल्य, लुप्त होती भाषा और कलाएँ, तथाकथित चापलूस बुद्धिजीवियों का अकर्तव्यबोध तथा साहित्य की मूल्यहीनता के माध्यम से शरद जोशी ने अपने समसामयिक परिवेश की बहुविध विसंगतियों को अधोरेखित कर भ्रष्टाचार के भारतीय महाकाव्य का सृजन किया है। कुल मिलाकर 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' भ्रष्टाचार का भारतीय महाकाव्य है।

संदर्भ :-

१. चयन एवं संपादन, छबिल कुमार मेहेर, समय संस्मरणों में (चर्चित संस्मरणों का विशिष्ट संग्रह) कांतिकुमार जैन, पृ.३८१
२. शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ. ५४
३. वही, पृ. १७-१८
४. वही, पृ. ५१
५. वही, पृ.७८-१०
६. वही, पृ.३५
७. वही, पृ.४२
८. वही, पृ.२५
९. वही, पृ. ६६
१०. वही, पृ.७०
११. वही, पृ.१४
१२. वही, पृ.१३६
१३. वही, पृ.१४१
१४. वही, पृ.१४०
१५. वही, पृ.१०४
१६. वही, पृ.१२४-१२५
१७. वही, पृ.१२०
१८. वही, पृ.९२
१९. वही, पृ.८७
२०. वही, पृ.७८
२१. वही, पृ.१२८

□□□

Scanned with CamScanner